सम्पादक की कलम से

स्वतन्त्रता

स्व–स्वभाव व–वजुद त–तन न्त्र–न्यायीक त्र–त्रसुर (डर) ता–ताकत।

स्वतन्त्रता का पुर्ण अर्थ होता है। स्वभाव के वजूद के तन की न्यायीक त्रसुर (डर) भगाने की ताकत। अर्थात स्वभाव के वजूद के तन की न्यायीक डर भगाने की ताकत। स्वभाव के वजूद के अनुसार तन मिलता है और तन तभी स्वस्थ रहता है जब न्याय प्राप्ति का कोई डर ना हो तभी पूर्ण ताकत के साथ अपना कार्य कर सकता है।स्वतन्त्रता अपनी प्रकृति का विकास करने का प्राकृतिक अधिकार है। अपनी भावना से भय मुक्त होकर व्यक्त करने के अधिकार को स्वतन्त्रता कहते है। स्वतन्त्रता स्वभाव के पूर्ण विकास की ताकत का एक नाम है। स्वतन्त्रता जीवन विकास की आवस्यक औषधि है। जिसका पान स्वाधिनता में ही संम्भव है। स्वतन्त्रता आपराधिक भाव से दुर रहते हुए विषय बन्धन से मुक्त रहते हुए ही प्राप्त किया जा सकता है। स्वतन्त्रता सभ्य मानव समाज कि पूर्ण मानसिक विकास की पहचान है। स्वतन्त्र मानसिकता से ही किसी कार्य विशेष की वैज्ञानिक पहचान दी जा सकती है। स्वतन्त्रता स्वाभाविक विकास की वह वैज्ञानिक क्रिया है जिसमें सहयोगी ऊर्जा पदार्थ स्वत: कड़ी की तरह जुड़ती जाती है। जो प्राकृतिक विकास का सदुपयोग करती है। स्वतन्त्रता स्वभाव का वह ताज है जिसे धारण करने के बाद ही अपने देश व प्रकृति का पूर्ण विकास किया जा सकता है। स्वतन्त्रता स्वभाव का वह सौन्दर्य है जिसे धारण करने के बाद हर व्यक्ति शान्त हो जाता है जिसका नूर उसके चेहरे पर दिखाई पड़ने लगता है जो उसे सुन्दर बना देता है। स्वतन्त्रता शब्द उस दिन से पूर्ण परिभाषित हुआ जब 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के रूप मे मनाया जाने लगा। इसी दिन भारत को लम्बे समय के बाद विदेशी हुकुमत से आजादी मिली थी। आजादी और स्वतन्त्रता एक ही गुण के दो नाम है। आजादी हमारे देश के महापुरुषो के बलिदान का परिणाम है। इन्हीं लोगो के विशेष योगदान से लोगो को स्वतन्त्रता मिली, इस स्वतन्त्रता से लोगो को अपने इच्छा अनुसार शासक बनने का अधिकार प्राप्त हो गया। पर जब तक व्यक्ति अपने आप मे स्वतन्त्र ना हो तब तक योग्य शासक का चुनाव नही कर सकता है। व्यक्तिगत अपना हित विषय बन्धन में व्यक्ति समाज का हीत नही देख पाता है। स्वतन्त्र राष्ट्र मे स्वच्छ शासक का चुनाव व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के बाद ही सम्भव है। और तभी अपनी स्वतन्त्रता स्वतन्त्र रह सकती है। ऐसा करने के बाद ही देश से भ्रष्टाचार को मिटाया जा सकता है। स्वतन्त्रता वहीं तक स्वतन्त्र है जहाँ से दूसरे की स्वतन्त्रता बाधित ना हो। समाज से ही शासक चूना जाता है। इस लिए समाज स्वतन्त्रता के अर्थ को समझकर स्वतन्त्र हो जाए तो शासक का सहीं चुनाव हो पायेगा। व्यक्ति बदलने से नहीं व्यक्ति के बदलने से भ्रष्टाचार मुक्त शासक का निर्माण हो पायेगा।जिसके बाद समाज की स्वतन्त्रता स्वतन्त्र रह पाएगी। सिर्फ तभी अपराध भयमीत होगा। अपराध करने वाले ही डरेंगे। अभी तो अच्छा इन्सान भी डरता है। कि कब कौन विरोधी होकर अपने परिचय का इस्तेमाल करतें हुए प्रताणित कर दें। अथवा योग्यता अनुसार कार्य करने को मिल पायेगा या नहीं। इस तरह के सवाल अच्छे इन्सान की स्वतन्त्रता को बाधित करतें है। स्वच्छ शासक बनाने से पहले स्वच्छ समाज स्थापित करने की आवस्यकता है। तभी स्वतन्त्रता का अर्थ समझकर हर स्वतन्त्रता का लाभ हर व्यक्ति ले पायेगा। स्वतन्त्रता जन्मजात प्राकृतिक अधिकार है जिसकी परिभाषा वैज्ञानिक है। जब व्यक्ति स्वतन्त्रता के साथ किसी विषय का निर्णय लेता है तब उसके गुण को सहीं रूप में पढ़ पाता है। यह भी जान पाता है की उसका गुण उसके लिए सकारात्मक होगा जो उसके गुणात्मकता को बढ़ा कर एक दूसरे गुण का निर्माण कर पायेगा अथवा नकारात्मक होगा जो उसके लिए बाँधा बनकर पीड़ा का कारण बनेगा। स्वतन्त्रता मे व्यक्ति का शरीर और मस्तिष्क दोनों की ऊर्जा केन्द्रीत होती है। जो विषय की वास्तविक पहचान कर पाती है। और अपने गुण क्षमता का पहचान हो पाती है। स्वतन्त्रता से जीव प्रदार्थ का सही उपयोग हो पाता है। वैज्ञानिक प्रणाली मे किसी विषय की वास्तविक पहचान स्वतन्त्रता के बाद ही सम्भव है। जब व्यक्ति किसी दर्शन या पूर्वाग्रह अथवा किसी अन्य के द्वारा दी गयी परिभाषा से बन्धित होकर किसी विषय को जानना चाहता है तो बन्धित विचार उसकी उर्जा को प्रभावित करने लगता जिसके कारण व्यक्ति विषय की वास्तविक गुण की पहचान नहीं कर पाता है। प्रकति सबसे बड़ी किताब है। विषय पदार्थ खुद अपने गुण को व्यक्त करते है व्यक्ति पूर्वाग्रहित होने के कारण उनके गुण को नहीं पहचान पाता है। स्वतन्त्रता के बाद इसके गुण को पढ़ा और पहचाना जा सकता है। मानव के अतिरिक्त प्रकृति के अन्य जीव स्वतन्त्र होने के कारण प्रकृति के जीव पदार्थ के गुण को पहचान लेते है। और जो उनके लिए गुणात्मक होता है उसे इस्तेमाल करते है और जो उनके काम का नहीं होता है उसे दूसरों के लिए छोड़ देते है। मानव स्वतन्त्रता के बाद ही पूर्ण ज्ञानी हो सकता है। जिसके बाद कोई रहस्य उसके लिए रहस्य नहीं रहेगा। स्वतन्त्रता व्यक्ति स्वयं बाधित कर सकता है अन्य कोई उसकी स्वतन्त्रता नही बाधित कर सकता है। स्वतन्त्रता मानव मस्तिष्क का तोहफा है। जो शरीर के बन्धन से बन्धित नही होता है। यह इच्छा शक्ति से क्रियान्वित होता है। इसमें शरीर कहीं भी हो पर वह जो चाहता है वहीं सोचते रहने से उसको सही मार्ग मिल जाता है और इच्छित उर्जा जिससे कार्य हो सकता है उसका इस्तेमाल करके अपने इच्छित विषय को पुरा करा लेता है। यदी किसी विषय की जानकारी करना चाहता है तो उसी के बारे में सोचते रहने अथवा उस विषय पर केंद्रीत करने से उसकी पूर्ण जानकारी मिल जाती है। यह सब स्वतन्त्रता के बाद ही सम्भव हो पाता है। शरीर को गुलाम बनाया जा सकता है पर व्यक्ति के मन मस्तिष्क और इच्छा शक्ति को कोई भी गुलाम नही बना सकता है जब तक की व्यक्ति उसे स्वयं ना गुलाम बना दें। यह गुलामी किसी के विचार से प्रभावित होने से अपनी चाहत की पूर्ति के लिए अथवा किसी पूर्वाग्रहित विषय से ग्रसित होने से ही सम्भव हो पाता है। स्वतन्त्रता से सही गुण विषय की पहचान कर उसे अपनाना गुलामी नही है। यहीं तो स्वतन्त्रता की सही पहचान है। आप सब लोग अपने मन मस्तिष्क और इच्छा शक्ति को स्वतन्त्र रखें कब किस मोड़ पर इसकी आवस्यकता पड़ जाए पता नहीं, इसलिये सही मार्ग की पहचान के लिए इसे स्वतन्त्र रखे और दूसरे की स्वतन्त्रता का विशेष ध्यान रखे। इसी के साथ आप सब को और खुद को भी स्वतन्त्रता दिवस ही हार्दिक शुभकामना और बधाई।

wallpapersget.com